MP Board Class 7th Hindi Bhasha Bharti Notes Chapter 2 दादी की घड़ी

दादी की घड़ी परीक्षोपयोगी गद्यांशों की व्याख्या

1. घर में एक ही अलार्म टाइमपीस था और वह बारी बारी से दीदी या भैया के सिरहाने रखा रहता। दीपू की बड़ी साध थी कि हम भी सिरहाने घड़ी रखकर सोएँ और उसकी सुरीली आवाज के साथ दिन की शुरुआत करें। उसके भाग्य में तो सुबह आठ बजे पापा की डाँट खाकर उठना ही लिखा था।

सन्दर्भ-प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'भाषा भारती' के 'दादी की घड़ी' नामक पाठ से अवतरित है। इसकी लेखिका श्रीमती मालती जोशी हैं। –

प्रसंग-प्रस्तुत गद्यांश में लेखिका ने बालसुलभ मन का सजीव चित्रण किया है।

व्याख्या-घर में सबसे छोटा होने के कारण दीपू की छोटी-छोटी इच्छाएँ भी पूरी न हो पाती थीं। दीपू के घर में एक ही अलार्म घड़ी थी। वह चाहता था कि अलार्म घड़ी को वह अपने बिस्तर के पास रखकर सोए जिससे सुबह समय पर उठ सके, किन्तु छोटा होने के कारण उसकी बारी ही न आ पाती। घड़ी पर तो उसके भैया व दीदी का ही कब्जा रहता। उसे बहुत बुरा लगता जब सुबह उसकी नींद न खुलती और प्रतिदिन पापा की डाँट-फटकार से दिन की शुरुआत होती।

2. मम्मी की सिफारिश काम कर गई। रात को घड़ी वाला स्टूल उसके सिरहाने था। उसे तो खुद चाबी भरने की इच्छा थी, पर दीदी का चेहरा देखकर चुप कर गया। घड़ी मिल रही थी, यही बहुत था।

रात भर उसे अलार्म के सपने आते रहे। उसने अपनी सारी किताबें तकिये के नीचे रख ली थीं। टेबल लैंप लगाने की भी सोच रहा था, पर डर के मारे चुप रहना पड़ा।

सन्दर्भ-पूर्व की तरह।

प्रसंग-प्रस्तुत गद्यांश में बाल-हठ द्वारा घड़ी पास रखकर सोने के सुखद सपने का वर्णन किया गया है।

व्याख्या-दीपू के जिद करने पर मम्मी को दया आ गयी और उन्होंने दीदी और भैया से घड़ी को दीपू के पास रखने के लिए कहा। मम्मी की सिफारिश से प्राप्त अलार्म घड़ी को अपने पास रखकर सोने के विचार मात्र से दीपू खासा उत्साहित हो गया। वह घड़ी में खुद ही चाबी भरना चाहता था, किन्तु दीदी के चेहरे के भावों को पढ़कर वह चुप ही रहा। प्रातः जल्दी पढ़ने के लिए उसने सारी तैयारियाँ रात में ही कर ली थीं। रातभर उसे घड़ी के बजते अलार्म के सपने आते रहे थे।

3. दीपू ने तरकीब सुनी, तो आश्चर्य से उसकी आँखें फैल गईं। दिन भर यही इन्तजार रहा कि कब रात हो तो वह तकिये का करिश्मा देखे। रात को उसने सबकी नजर बचाकर तकिये से अपनी बात कही और इत्मीनान से सो गया। सुबह उठा तो वही आठ बज रहे थे। दूसरे दिन भी यही हाल रहा, फिर तीसरे-चौथे दिन भी। फिर उसने यह नुस्खा ही मन से निकाल दिया। समझ गया दादी की भूत-प्रेतों और परियों की कहानियों की तरह यह तरकीब भी निरी गप्प ही थी।

सन्दर्भ-पूर्व की तरह।

प्रसंग-प्रस्तुत गद्यांश में दादी द्वारा दीपू को सुबह जल्दी उठने के लिए सुझाई गई तरकीब के क्रियान्वयन का वर्णन किया। गया है।

व्याख्या-दादी ने सुबह जल्दी उठने के लिए दीपू से कहा कि वह रात को सोते समय अपने तकिए से अभीष्ट समय पर जगाने के लिए बोलकर सोए। दीपू ने अचरज और उत्सुकता के
साथ रात होने की प्रतीक्षा की ओर फिर रात को तकिए से अपने। मन की बात कहकर निश्चित हो सो गया, परन्तु सुबह जब वह। सोकर उठा तो हमेशा की तरह आठ बज रहे थे। दीपू ने दूसरे दिन फिर से इस तरकीब को आजमाया, परिणाम इस बार भी जस का तस निकला। तीसरे और चौथे दिन भी तरकीब को सफल न होतें देख वह निराश हो उठा और दादी की भूत-प्रेतों तथा परियों की काल्पनिक कहानियों की तरह इस तरकीब को भी गप्प मानकर वह भूल गया।

4. दादी ने उसे और भी पास सटाते हुए कहा, “दीपू बेटा, तू तो पागल हो गया है। तकिया भी कहीं बोलता है।” असली अलार्म तो हमारे दिल में होता है। जब हमें जरूरी उठना होता है, तो यह हमें जगा देता है। घड़ी की आवाज तो तू बन्द भी कर सकता है, पर इसकी आवाज बन्द नहीं होती, जगाकर ही छोड़ती है।

सन्दर्भ-पूर्व की तरह।

प्रसंग-प्रस्तुत गद्यांश में दिल को ही वास्तविक अलार्म घड़ी बताया गया है।

व्याख्या-दादी ने दीपू को अपने और करीब लाते हुए प्यार से समझाया कि भला तकिया भी कहीं बोलता है जो दूसरों को जगा देगा ? वास्तव में असली अलार्म तो मनुष्य का दिल होता है। जब कभी हमें अवश्य एवं निश्चित समय पर सुबह उठना होता है, तो वह हमारा दिल ही है, जो हमें अभीष्ट समय पर अपने आप उठा देता है। अलार्म घड़ी की आवाज को तो हम चाहें तो बन्द भी कर सकते हैं, किन्तु दिल की आवाज को बन्द नहीं किया जा सकता है। यह तो हमें उठाकर ही शान्त होती है। दिलरूपी घड़ी का रहस्य जानकर दीपू प्रसन्न हुआ।

शब्दकोश
लाड़ला = प्यारा; अन्याय = न्याय न होना; हताश = निराश; निरे = बिल्कुल; सुर में सुर मिलाना = साथ-साथ गाना, समर्थन करना; चौतरफा = चारों तरफ।

https://www.evidyarthi.in/